आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 260 | ARYA SABHA MAURITIUS | *1st Dec. to 16th Dec. 2012*

Code de conduite pour l'élévation de l'âme

Adbhirgātrāni shudhyanti manah satyéna shudhyanti.
Vidhātapobhyām bhutātmā budhirjyānena shudhyanti.

Manu. Smriti :-- Adhyāya 5 Sloka 105

Interprétation de cette citation du grand sage Manu par Mahārishi Dayānanda Saraswati dans son livre des sacrements intitulé 'Sanskār Vidhi':--

Avec de l'eau on peut nettoyer ou purifier toute la partie extérieure de notre corps, mais pas notre esprit ou notre âme.

L'esprit ('man' en Hindi) n'est purifié que par l'adoption et la pratique de la vérité dans notre âme, dans notre pensée, dans nos paroles et dans nos actions.

Notre âme ('Atmā' en Hindi) est purifié par le truchement des prières, du yoga, de la discipline, de l'éducation, l'honnêteté, la tolérance, la non-violence et du service ā l'humanité.

Notre capacité intellectuelle ('Budhi' en Hindi) est développée et perfectionnée à travers l'éducation.

La religion ('Dharma' en Hindi) n'est qu'un projet de société qui comprend de l'éthique, des cultes, des codes de conduite morale et spirituelle que tout le monde doit adopter et mettre en pratique afin d'avoir une vie accomplie.

Le comportement des gens ('ācharana' en Hindi) envers leurs prochains doit être ainsi :--

On doit toujours entretenir en soi des manières avenantes. On ne doit jamais, par ses gestes, ses paroles ou ses actions, blesser les sentiments d'autrui.

Ainsi cette attitude positive devient réciproque entre le`s gens. Conséquemment une ambiance amicale s'installe dans ce milieu et un havre de bonheur et de paix est créé.

N. Ghoorah

हमारे सम्मानित आर्य सेवक

डॉ० उदयनारायण गंगू,ओ.एस.के,आर्य रत्न

आर्य सभा प्रति वर्ष दीपावली के पावन पर्व पर तीन समाज सेवकों को 'आर्य भूषण' की उपाधि से सम्मानित करती है। साथ ही हर ज़िले के एक-एक महानुभाव को भी विभूषित करती है। अनवरत और निस्वार्थ सेवा प्रदान करने वाले जिन तीन वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को सभा ने 'आर्य भूषण' की उपाधि प्रदान की, वे हैं —

(१) पंडित माणिकचन्द बुद्धु,
(२) श्री शिवदत्त भवानी और
(३) श्रीमती प्रियम्वदा जीबन ।

ज़िले के स्तर पर सम्मानित होने वाले आर्य सेवकों के नाम इस प्रकार हैं –

फ़्लाक आर्य ज़िला समिति की ओर से
– पंडित शिवशंकर रामखेलावन
मोका आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्रीमती कमलावती भगोवन
ग्राँ पोर आर्य ज़िला समिति की ओर से
– डॉ० देवरतन लीछू
सावान आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्री हंसराज बद्धु
पोर्ट लुई आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्री धरमराजसिंग रूपन
ब्लाक आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्री खेमराज जी मंग्रू
प्लेन विल्येम्स आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्री वेदमित्र जगेसर
रिव्येर जू राँपार आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्री जयनारायण आजागीर
पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला समिति की ओर से
– श्रीमती लीलावती नागा

पंडित माणिकचन्द बुद्धु

पंडित माणिकचन्द जी सन् १९६१ ई० से समाज-सेवा में रत रहे हैं। सर्वप्रथम आप स्थानीय ग्रामीण परिषद् के सदस्य और बाद में उसके प्रधान बने। आप सन् १९६४ से १९७४ तक स्थानीय समाज कल्याण केन्द्र समिति के सदस्य के रूप में योगदान देते रहे। स्थानीय स्वनिर्मित सायंकालीन पाठशाला में आपने वर्षों तक हिन्दी, हिन्दी साहित्य तथा धार्मिक साहित्य का निःशुल्क पाठ दिया।

आपने प्वेंत ओ पिमाँ में तीन आर्य समाज की शाखाओं की स्थापना की। पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला समिति के अन्तर्गत अब तक वेद प्रचार-कार्य करते रहे हैं।

आप आर्य पुरोहित मण्डल के सदस्य और प्रधान भी बने । आर्य सभा की ओर से 'वैदिक वाणी' और 'अमृत वाणी' कार्यक्रम में समय-समय पर सन्देश देते रहे। आपकी अनेक विध सेवाओं को देखते हुए आर्य सभा ने आपको 'आर्य भूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

अभिभावक और बच्चे

अभिभावकों और बच्चों में अटूट प्रेम होता है। सदा उनमें सुखद तथा मधुर रिश्ते कायम रहते हैं। माता-पिता तो हमेशा अपनी संतानों को हर प्रकार का सुख देने में तत्पर रहते हैं। माँ-बाप हर वक्त अपने बच्चों के मनोवांछित साधन प्रदान करने के लिए बेचैन रहते हैं। उन्हें हर प्रकार का सुख-चैन देने में उथल-पुथल मचा देते हैं। अपने आहार, वेश-भूषा और रहन-सहन का ख्याल न करते हुए, अपने बच्चों के खान-पान, पोशाक और अन्य जरूरतों पर पूरा ध्यान देते रहते हैं।

चतुर अभिभावक सदा अपनी संतानों की सेवा-शुश्रूषा मनोरंजन, व्यायाम, स्वास्थ्य-रक्षा और शिक्षण-व्यवस्था पर ध्यान देते हैं। उनके व्यवहारों तथा चरित्र पर अपनी पैनी दृष्टि डाले रहते हैं। उनमें सुसंस्कार पैदा करने का प्रयत्न करते रहते हैं, ताकि वे सुसंतान बन सकें। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें संगीत, कला, मनोरंजन, खेलकूद आदि के ज़रिए आनन्द प्रदान करने की व्यवस्था करते हैं ताकि वे अपनी आयु और योग्यता के अनुसार शिक्षित, आनन्दित, बलयुक्त और संस्कारी बनते जाए। अपने बच्चों को सज्जन बनाना अभिभावकों का परम उद्देश्य माना जाता है।

आज के अधिकतर माता-पिता अपने जीवनोपार्जन की दौड़ में इतने व्यस्त दिखाई देते हैं कि वे अपने बच्चों को धार्मिक-शिक्षा प्रदान करना भूल रहे हैं। उन्हें ज्ञान-विज्ञान के महाज्ञानी तो बना रहे हैं, परन्तु संस्कार के नाम पर कुछ देने के लिए कोई उपाय नहीं करते हैं। उनकी शिक्षण-व्यवस्थाओं में ढेर सारे धन लगा रहे हैं और उनकी सुविधाओं पर ज़ोर दे रहे हैं, परन्तु उन्हें धार्मिक क्षेत्र में कदम रखने के लिए प्रभावित नहीं करते हैं। इसी कारण आज के ज्यादातर युवा-युवती विद्वान्-विदुषी, सम्पन्न और उच्च पद के अधिकारी होकर भी चरित्रवान तथा गुणवान नहीं दिखाई देते हैं। जिन कारणों से हमारी सामाजिक दशा दयनीय होती जा रही है और कई परिवारों के सुख, शान्ति तथा आनन्द दूर हो रहे हैं।

आज हमारे अधिकतर बच्चों में ज्ञान-विज्ञान की अपार शक्ति है, उनमें आर्थिक क्षमता है, उनमें जीवकोपार्जन अर्थात् जीने के लिए सर्वोत्तम साधन मौजूद हैं, मगर वे चरित्रहीन, कर्महीन और दुराचारी दिखाई देते हैं। वे चरित्रहीनता का काला धब्बा लगाकर अपनी छबि तो खराब कर रहे हैं, उधर अपने परिवारों का स्वर्गमय जीवन नष्ट कर रहे हैं। अपने समाज का महत्व घटाते हुए राष्ट्रीय उत्थान में बाधाएँ उत्पन्न कर रहे हैं। इस गम्भीर समस्या का समाधान ढूँढ़ने की अति आवश्यकता है, अन्यथा आज के युवा, कल के अच्छे नागरिक नहीं बन सकेंगे ।

अभिभावकों से निवेदन है कि वे अपने घरेलू-वातावरण को अच्छा बनाने की पूरी कोशिश करें। बच्चों में नैतिक-शिक्षा देने का साधन ढूँढें। अगर कोई बच्चा बिगड़ भी गया हो तो डाँट-फटकार से नहीं, ठीक से समझाने का यत्न करें, बल्कि सारी बातें बड़े प्यार एवं मनोवैज्ञानिक तरीके से समझाने का उपाय करें ताकि आपके प्रेमभाव, सहयोग और सुझावों को ग्रहण करके वे सुशील, कर्मशील, धर्मनिष्ठ और श्रेष्ठ नागरिक बनने के अधिकारी हो सके।

ध्यान रहे कि दूसरे युयोग्य, चतुर और सुशील बच्चों से अपने बच्चे की तुलना करना गलत है । ऐसा करने से उनके अन्दर हीन भावना उत्पन्न हो जाती है । वे सुधरने के बदले में और अधिक बिगड़ सकते हैं । हर बच्चे में अपनी क्षमता और योग्यता होती है। वह अपनी बौद्धिक-शक्ति के माध्यम से तथा अपने अभिभावकों के प्रेम और सहयोग से अच्छे बन सकते हैं । इसी कारण उनके शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक और चारित्रिक विकास में सहायक बनकर उनकी क्षमता और योग्यता के आधार पर सुधार करने में सदा तत्पर रहे । ऐसा व्यवहार करने से हमारे बहुत से युवावर्ग कर्मयोगी बनकर सुखमय जिन्दगी गुज़ारने में कामयाब हो जाएँगे और उनके अभिभावकों का महा तप-त्याग तथा अरमान अवश्य पूरा होगा ।

बालचन्द तानाकूर

चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न - मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

२००६ में भारत की राजधानी नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का सिलसिला शुरू हुआ था और तब ही निश्चय किया गया था कि पाँच वर्ष बाद फिर उसी दिल्ली में आर्य महा सम्मेलन किया जाएगा। सो गत २५ से २८ अक्तूबर २०१२ तक रोहिनी के विशाल मैदान में स्थित जयंती पार्क में संपन्न किया गया। इसके लिए इतना विशाल पण्डाल खड़ा किया गया था कि ऊँचे भव्य मंच से पिछला छोर मुश्किल से दृष्टिगोचर होता था।

यह महा सम्मेलन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मिले-जुले सहयोग से आयोजित हुआ था। इसमें भाग लेने के लिए विशाल भारत के कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक और भारत से बाहर के २८-२९ देशों से आर्य जनों की बेशुमार उपस्थिति देखकर आर्य जगत में निराशा और शिथिलता का जो भान हो रहा था, उसको झुठला दिया गया। इतना अदम्य उत्साह था कि महा ऋषि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्य समाज की सार्थकता साफ़ नज़र आने लगी ।

केवल मोरिशस से ६४ प्रतिनिधियों का एक शिष्ट मण्डल वहाँ दो चार दिन पहले ही पहुँच चुका था, जिसका नेतृत्व आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी और सभा महामंत्री श्री सत्यदेव प्रीतम ने किया था। इनके अलावा उपमन्त्री श्री बालचन्द तानाकूर जी, उपकोषाध्यक्ष श्री विरजानन्द तिलक और पुस्तकाध्यक्ष श्री बिसेसर राकाल जी के साथ पुरोहित मण्डल के प्रधान पंडित श्याम दयबू भी थे।

देशी व विदेशी प्रतिनिधि इस कदर हिल मिल गये थे कि मुश्किल से किसी प्रकार का भेद नज़र आ रहा था। एक विशेष मौक़ा था बाहर देशों से आये हुए प्रतिनिधियों से मेलजोल और परिचय बढ़ाना। विश्वबंधुत्व का एक अपूर्व प्रदर्शन था। वेद का संदेश वसुधैव कुटुम्बकम् का जो नारा है शत प्रतिशत सार्थक हो रहा था।

देश विदेश से आये हुए सैकड़ों श्रद्धालु जनों ने अपनी उपस्थिति देकर सिद्ध कर दिया कि आर्यसमाज एक विश्व स्तर की महान् संस्था है जिससे दुनिया को बहुत आशा है। हमारे समस्या पूर्ण संसार को आर्य समाज ही सही राह दिखा सकेगा और विश्व को आर्य बना सकेगा ।

हमने इतनी भारी संख्या में आर्य संन्यासियों को एक स्थान पर एकत्रित कभी नहीं देखा था। परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद मंत्रों का प्रसारण सुनते बनता था। विशाल मैदान में जगह जगह मंडप बने हुए थे। कहीं दिन भर लगातार यज्ञ चल रहा था तो कहीं दूसरा कार्यक्रम। कहीं शंका समाधान हो रहा था तो कहीं मीडिया के नवीनतम उपकरण की सार्थकता का प्रदर्शन चल रहा था। जिसको जो विषय प्रिय था उसकी पूर्ति की सुविधा का प्रावधान था। पुस्तकों की बिक्री के लिए २० से ३० तक मण्डप सजाये गये थे जहाँ से लोग विशेषकर वैदिक साहित्य से परिचित हो रहे थे और पुस्तकों और अन्य प्रकाशित सामग्री से लैश हो रहे थे।

पहली बार हमने युवक-युवतियों और वीरांगनाओं की इतनी विशाल संख्या देखी जो अपने अपने सेवा कार्य में रत थी। कौन कहता है कि नई पीढ़ियों को वेदों के प्रति अनुरक्ति नहीं है। उस नज़ारे को देख अनायास कहा जा सकता है कि दयानन्द का श्रम व्यर्थ नहीं गया। स्वामी दयानन्द चाहते थे कि नारी आगे आए, आज आर्य जगत इस बात को सार्थक कर रहा है। महिलाओं की बड़ी संख्या देखकर (Equal Opportunity) समान अधिकार का साक्षात्कार हुआ। ये सब देखकर महर्षि जी की आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होगी ऐसी हम संकल्पना करते हैं।

क्रमशः

पृष्ठ १ का शेष भाग

श्री शिवदत्त भवानी

श्री शिवदत्त भवानी जी न केवल सावान ज़िले में ही सेवा करते रहे हैं, बल्कि आर्य सभा की अनेक समितियों में भी सदस्य के रूप में आपका योगदान प्राप्त होता रहा है। आपने लम्बे समय तक हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में आपने अपना बहुत सा समय दिया है। आपने अपने नाम से आर्य सभा की स्थिर निधि में भी आर्थिक योगदान दिया है।

आप नौ वर्ष तक ग्राम परिषद् के सदस्य रहे। आपने कभी प्रधान तो कभी कोषाध्यक्ष बनकर ग्राम की सेवा की। अपने गाँव के सहकारी सभा (Co-operative C.C.S) के सदस्य रहे और आपने चाय की सहकारी सभा (Co-operative Tea Marketing Society) के कभी प्रधान और कभी मंत्री बनकर सेवा की।

आपकी विभिन्न सेवाओं को ध्यान में रखते हुए सभा ने आपको 'आर्य भूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

श्रीमती प्रियम्वदा जीबन

श्रीमती प्रियम्वदा जीबन के नाना पंडित जगनन्दन नन्दलाल जी अपने लगभग १९४०-४५ के साल में आर्य सभा मोरिशस के वरिष्ठ पुरोहित में गिने जाते थे।

आप अपनी माँ सावित्री गोपी और अपने पिता जी की प्रेरणा से आर्य समाज के कार्य सम्भालती थीं। आपका विवाह लाफ़्लोरा गाँव में हुआ था। अपने पिता जी की सलाह से आपने लाफ़्लोरा महिला समाज की स्थापना की ।

विवाह से पूर्व लाफ़्लोरा गाँव के समाज से जुड़ी हुई थी। समाज के कार्यों में अपनी माँ को पूरा सहयोग देती थीं। लाफ़्लोरा महिला समाज से ही आपका औपचारिक सामाजिक जीवन आरम्भ हुआ।

विवाह के पश्चात् जब रोज़बेल आईं तब सिर्फ़ पुरुष समाज था, महिला समाज नहीं था। आपके ससुर अपने सदस्यों के साथ मिलजुल कर समाज का कार्य करते थे। आप १९७४ से २००४ तक रोज़बेल आर्य महिला समाज शाखा नं० ३१७ की प्रधाना रह चुकी है। अपने कार्य-काल में जब आप हिन्दी अध्यापिका का काम करती थीं तब तो आप अपने परिवार की देख भाल के साथ-साथ अपने गाँव के समाज का भी कार्य करती थी।

आर्य सभा ने आपको 'आर्य भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया ।

श्री जयनारायण आजागीर जी

श्री जयनारायण आजागीर जी की आयु इस समय बयासी वर्ष की है। आप आठ सन्तानों के पिता हैं – दो पुत्र और छः पुत्रियाँ। आपने बचपन में अभावग्रस्त जीवन व्यतीत किया। एक वीर सिपाही की तरह गरीबी से लड़ते हुए अपने हाथों अपने भाग्य का निर्माण किया। आज आप सभी दृष्टियों से पूर्ण सम्पन्न हैं।

सन् १९३८ में श्री जयनारायण जी के हाथ बाल सत्यार्थप्रकाश लगा। इस महान् कृति के स्वाध्याय से आप सनातनी से वैदिक धर्मी बने। आपने अपनी यौवनावस्था में आर्य कुमार दल की स्थापना की और समाज-सेवा की ओर प्रवृत्त हुए। आर्य सामाजिक कार्यों में अपनी उदारता का परिचय देते रहे हैं। आपके सभी बच्चे महर्षि दयानन्द के भक्त और वेदानुयायी हैं।

आर्य सभा ने आपके योगदान को ध्यान में रखते हुए दीपावली के अवसर पर आपको सम्मानित किया।

क्रमशः

ओ३म्

आर्य सभा मोरिशस

कर्मकाण्ड में एकरूपता

आर्य सभा के पुरोहित-पुरोहिताओं को सूचित हो कि धर्मार्य सभा ने विचार-विमर्श करके ये निर्णय लिए हैं :–

आर्य मंदिरों में साप्ताहिक यज्ञ

४५ मिनट का यज्ञ
२५ मिनट सत्संग, सन्देश
५ मिनट सामाजिक सूचना - साधारण यज्ञ

- मंत्रों का शुद्ध उच्चारण किया जाय ।
- मंत्रों के आरम्भ में ओ३म् बोला जाय ।
- यज्ञ के मंत्र पढ़ते समय पुरोहित और यजमान दोनों स्वाहा बोले ।
- यज्ञ समय पर आरम्भ करें और बीच-बीच में अन्य मन्त्र न जोड़ें ।
- विशेष अथवा वृहद यज्ञ में अधिक समय लगा सकते हैं।
- शाम के यज्ञ में सन्ध्या के लिए भी समय लगा सकते हैं।
- वृहद यज्ञ की पूर्णाहुति के लिए पण्डाल में बैठे श्रोताओं को बुलाकर आहुति न दिलायें।
  यह संस्कार विधि के अनुकूल नहीं है।
- बृहद यज्ञ में पहले बैठे यजमानों को बिना आचमन किए आहुति न दिलाई जाय।

शवदाह के कर्म

- श्मशान भूमि में संस्कार सम्पन्न करते समय श्मशान भूमि में उपस्थित अन्य लोगों से आहुतियाँ न दिलाई जायें ।
- मृतक के घर पर गृह शुद्धि तथा शोकातुर परिवार के धैर्य के लिए यज्ञ किया जाता है। यह यज्ञ परिवार की इच्छा के अनुसार कई दिनों तक किया जा सकता है।

इस अवसर पर आचमन, अंग-स्पर्श, ईश्वर-स्तुति के बाद अग्निहोत्र में स्वस्तिवाचन तथा शांति-करण के मंत्रों से आहुति, आधारावाज्य, व्याहृति, स्विष्टकृत और मौन प्रजापत्य, विश्वानि, गायत्री आदि मन्त्रों से आहुति देकर पूर्णाहुति करें ।

संस्कार विधि में दशगात्र, मासिक, वार्षिक क्रिया करने का विधान नहीं हैं। यजमान की इच्छानुसार पुण्य स्मृति यज्ञ करा सकते हैं ।

धर्मार्य सभा

धर्मेन्द्र रिकाय *प्रधान* धनवन्ती पोखराज *मन्त्री*

सामाजिक गतिविधि

एस. प्रीतम

गंगा स्नान

जैसे इसका नाम है, यह पानी का पर्व है जैसे दीपावली ज्योति का त्योहार है। पाँच तत्वों में पानी एक अति महत्वपूर्ण तत्व है। आखिर ब्रह्माण्ड व पिण्ड में तीन चौथाई (३/४) तो पानी ही पानी है।

गंगा तो पानी का प्रतीक है ही। वेदों में गंगा शब्द आया है। गंगा खाली पानी ही नहीं बल्कि जो भी पदार्थ बहता है, चलता है, एक स्थान पर नहीं रहता।

गंगा को माँ शब्द से अभिहित करते हैं जैसे धरती को, गुरु पत्नी को अपनी बायोलोजिल (Biological Mother) जैविकीय माँ को क्योंकि उनसे कल्याण ही कल्याण होता है।

एक क्षण के लिए ज़रा सोचिए, पानी न केवल आवश्यक है अपितु अनिवार्य है जिन्दा रहने के लिए। इसलिए गंगा का इतना महत्वपूर्ण स्थान है भारतवर्ष में।

हमारे पूर्वज़ गंगा के देश भारत को छोड़कर यहाँ मोरिशस आये और शक्कर उद्योग में काम करने के लिए गये विभिन्न देशों में, यद्यपि वहाँ गंगा नहीं पायी जाती है फिर भी प्रतीकात्मक रूप में 'गंगा स्नान' मनाया गया।

इस साल निम्न स्थानों पर गंगा स्नान मनाया गया आर्य सभा मोरिशस की ओर से –

१. पाम्प्लेमूस ज़िले में - प्वेंतु ओ पिमाँ
२. रिव्येर ज्यू रम्पार में - आँस लारे
३. फ्लाक में - बेलमार
४. ग्राँ पोर में - ब्लूबे, ले बूशों, ला काँबीज़,ब्वा दे जामूरेत,पेची साब, ओल्ड ग्राँ पोर, बाँबू विरिये
५. सावान में सूयाक और रिव्यरे दे गाले (ब्लाक रिवर ज़िले के चन्द गाँव)
६. प्लेन विलियेम्स - ब्लाक रिवर में - फ्ली-काँ-फ्लाक में

विश्व के अन्य देशों के राष्ट्रीय उत्थान में आर्य समाज का योगदान

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - २०१२ - दिल्ली, में प्रस्तुत आर्य सभा मोरिशस के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी का आलेख।

प्रश्न उठता है कि राष्ट्र का उत्थान कैसे हो? क्या भाईचारे, परस्पर प्रीति एवं एकता के अभाव में राष्ट्र उन्नत हो सकता है? आर्य समाज के नियमों का अवलोकन करने से स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित इस समाज का उद्देश्य मानव-कल्याण है। विश्व-शान्ति से ही मानव का कल्याण हो सकता है ।

आर्यसमाज ने विश्व को शान्ति का सन्देश दिया। विश्व के जिस भी किसी देश में आर्य समाज की स्थापना हुई, वहाँ राष्ट्रीय उत्थान में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जहाँ साम्प्रदायिकता का बोलबाला होता है, वहाँ पारस्परिक विद्वेष की भावना सबल होती है। संकुचितता के कारण दंगा-फ़साद, और गृह-युद्ध होते रहते हैं।

जिन-जिन देशों में आर्य समाज की पताका लहराती रही है, वहाँ शान्ति का साम्राज्य रहा है। इसके प्रमाण में हम मॉरीशस का उदाहरण देना चाहेंगे। मॉरीशस एक बहुजातीय देश है, जिसमें अनेक संस्कृतियों के लोग निवास करते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से भारतीय मूल के लोग शर्तबन्द मज़दूर बनकर मॉरीशस की धरती पर पदार्पण करने लगे। सन् १९१० ईसवी तक आप्रवासन का काल बना रहा। आर्य समाज की स्थापना के लिए महर्षि दयानन्द तो मॉरीशस नहीं गये; पर सन् अठारह सौ अठानबे में उनके दो ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' और 'संस्कार विधि' बंगाल के एक सैनिक – भोलानाथ तिवारी द्वारा मॉरीशस पहुँचे। इन दोनों ग्रन्थों के पठन-पाठन से मुट्ठी भर प्रगतिशील हिन्दुओं ने सन् १९०३ ई० में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की । तब से आज तक आर्य समाज ने मॉरीशस राष्ट्र की उन्नति में अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

एक राष्ट्र के उत्थान के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता विद्या की है। आर्य समाज के आठवें नियम ने सिखाया – *'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'* आर्य समाज के प्रचारकों ने विद्या के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व कार्य किये । अविद्या और अन्धविश्वास में डूबी भारतीय मूल की जनता को विद्या का प्रकाश दिखाया। लड़कियों को विद्या-मन्दिर में प्रवेश पाने का अधिकार नहीं था। आर्य समाज ने सिखाया कि कन्याएँ कल की माताएँ हैं। उन्हें पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त करना है, ताकि वह घर-परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण कर सकें । एक राजनेता ने कहा था – Give me a good mother, I will give you a good nation – अर्थात् मुझे एक अच्छी माता दो, मैं तुम्हें एक अच्छा राष्ट्र दूँगा। आर्य समाज ने बताया कि माता शक्ति का स्रोत है। सहनशीलता एवं क्षमाशीलता में धरती माता के समान है। विद्या दान करने में सरस्वती-सम है। ऐश्वर्य की वर्षा करने में लक्ष्मी के तुल्य है। सेवा-उदारता, तप-त्याग एवं वात्सल्य में देवी-स्वरूपा है। उसकी उपेक्षा करना महापाप है ।

आर्य समाज ने नारी-उत्थान और सशक्तिकरण तथा नारी कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। सर्वप्रथम, आर्य समाज ने ही नारी को वेद पठन-पाठन की अधिकारिणी बनाया। इससे पूर्व नारी समुदाय को वेद पठन-पाठन पर प्रतिबन्ध था। मुम्बई में आयोजित प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय जो अट्ठाईस नियम स्वीकृत किये गए, उनमें नारी सशक्तिकरण का प्रारम्भ से ही विशेष ध्यान रखा गया। नियम छः के अनुसार प्रत्येक समाज में एक प्रधान पुरुष, दूसरा मन्त्री तथा अन्य पुरुष और स्त्री सभासद होंगे। नियम बीस के अनुसार स्त्री और पुरुष इन दोनों में विद्याभ्यास के लिए यथासम्भव प्रत्येक स्थान में आर्य विद्यालय पृथक-पृथक बनाए जायेंगे। स्त्रियों की पाठशालाओं में अध्यापिका आदि का सब प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जायगा।

इस प्रकार समाज की स्थापना के समय से ही वे नारी सशक्तिकरण के लिए कटिबद्ध थे। यह महर्षि दयानन्द का ही सत्प्रयास था कि नारी सशक्तिकरण के हितार्थ जगह-जगह कन्या पाठशालाएँ खुलीं और उनमें बालिकाओं के मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक विकास के लिए समुचित शिक्षा देने की व्यवस्था की गई । भारत में जन्मी, महर्षि दयानन्द की एक सुपुत्री पूज्य डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज की अर्द्धांगिनी, श्रीमती सुमंगली देवी वह प्रथम महिला थीं, जिन्होंने मॉरीशस की स्त्रियों को बताया था कि नारी निर्माणकर्तृ है। उसे शिक्षार्जन करके अपनी शक्ति का विकास करना है। उन्होंने नारियों को सामाजिक क्षेत्र में उतरने का आह्वान किया था। उनकी पुकार सुनी गई । विद्या का प्रचार हुआ। महिलाएँ सेवा-क्षेत्र में उतरीं। उन्होंने अपने विद्या-दान, श्रम-दान और धन-दान से आर्य समाज रूपी पौधे को सींचा और इसे वट-वृक्ष का रूप दिया। हिन्दी शिक्षण, सन्ध्या-हवन, भजन-प्रवचन के द्वारा महिला समाज उन्नत होता गया। महिलाओं के तप-त्याग से इस टापू में सूर्य-चन्द्र की ज्योति फैल गई । इस ज्ञान-ज्योति ने सबको अपनी ओर आकर्षित किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि महिलाओं के शिक्षित होने से मॉरीशस राष्ट्र का उत्थान हुआ। माताओं ने ऐसे सुपुत्रों को उत्पन्न किया, जो मॉरीशस देश की गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़कर देश की स्वतन्त्रता की ध्वजा फहरा दी। चहुँ ओर से सागर की लहरों से सुशोभित मॉरीशस द्वीप आर्य समाज के सन्देशों से उन्नत हो उठा ।

आर्य समाज का तीसरा नियम है — *'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'*

आर्य समाज के अनुयायियों ने इस तीसरे नियम के पालन में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। वेद का पढ़ना-पढ़ाना अपना परम धर्म माना। यजुर्वेद का सन्देश है—

'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'

यजु : ९.२३

अर्थात् हम राष्ट्र रक्षा में जागरूक रहें और सदा अग्रगणी रहें ।

क्रमशः

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के, आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

यह संसार कर्म के बन्धन से बन्धा है

ऋषिका, आचार्या, डॉ० उषा शर्मा, 'उषस्'

ओ३म् ।। कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छ समाः ।
एवं त्वयि नाऽन्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

।। यजुर्वेद ४०,२ ।।

प्रजापति ने इस संसार में अनेक प्रकार की प्रजा को जन्म दिया। जिसमें जड़, चेतन, पशु मनुष्यादि हैं, परन्तु इसमें मनुष्य सबसे उत्तम संतान है। मानव अपने पिता का केवल प्रजा नहीं, सुप्रजा है। केवल सुपुष्ट नहीं, अत्यन्त सुन्दर तथा पुष्ट शरीर वाला है। सभी वीर पुरुषों में अत्यन्त दृढ़ तथा वीरों में वीर है। आर्य (श्रेष्ठ) तथा दैवी प्रजा है।

दो प्रकार की योनि है – एक कर्मयोनि तथा दूसरी भोगयोनि। मनुष्य कर्मयोनि में आता है। इसीलिए ऊपर के मंत्र में मानवों को ईश्वर उपदेश देते हैं कि इस संसार में कर्म करने की इच्छा करते हुए सौ वर्ष तक जिओ।

कर्म के बिना संसार में और कुछ भी नहीं है। निष्क्रिय जीवन किसी के लिए भी अच्छा नहीं है। कभी आलस्य, प्रमाद, मत करो। प्रमाद का अर्थ लापरवाही है। अपने कार्य को श्रद्धा, भक्ति और विश्वास से करो। उसीसे सफलता मिलेगी और कार्य में स्वार्थपरता न होकर दूसरों का कल्याण हो सकेगा। तब कर्म में मानव तो लिप्त होगा, परन्तु कर्म मानव से लिप्त नहीं होगा, अर्थात् मानव पर कर्म हावी नहीं होगा। जहाँ कर्म हो जाता है, वहाँ मानव का प्रयत्न, तपस्या, समाप्त हो जाती है। अतः मानव को कर्म करते समय कर्त्तव्य भावना रखनी चाहिए, तभी कर्म भी सफलता पूर्वक होगा और मानव भी प्रशंसा के योग्य हो सकता है।

मानव ही क्या सभी जगत् कर्म के बन्धन से बन्धा हुआ है। प्रकृति का अपना कर्म है। सभी प्रकृति तत्वों में अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी, ये पाँच तत्व हैं। जहाँ ये तत्व होते हैं, वहीं उन्नति होती है। कुछ लोगों ने परमात्मा पर विश्वास रखने के लिए कह दिया – अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम। दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।

यह तो सत्य है कि परमात्मा पर हमें पूर्ण विश्वास होना चाहिए, परन्तु अपना प्रयत्न भी आवश्यक है। प्रत्येक प्राणी अपनी चोंच भरने के लिए प्रयत्न अवश्य करता है। माता की छाती में दूध है, परन्तु पीने के लिए नन्हें से बच्चे को भी जीभ से दूध खींचना पड़ता है। कई बार बच्चे को पसीना आ जाता है। अजगर भी जंगल में भोजन की खोज में घूमता है। पंछी भी अपना घोंसला छोड़कर दूर-दूर जाते हैं। मधुमक्खी मधु की खोज में ३-३ किलो मीटर उड़कर जाती है। ये सभी कर्म में आते हैं। तुलसीदास जी ने कहा –

सभी पदारथ या जगमाहीं।
भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।।

भाग्य शब्द कर्म का ही द्योतक है। हम प्रतिदिन प्रातः उठकर *'भग एव भगवानस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम' की प्रार्थना करते हैं।'* **'भगस्य भावः भाग्यः'** ऐश्वर्य का होना ही भाग्य है। आज मैं ने रोटी बनाई तो भाग्य बन गया, यदि नहीं बनाई तो भाग्य बिगड़ गया। उसको कोई बना नहीं सकता, इसलिए सभी फल कर्म प्रधान होते हैं। भगवतगीता में भगवान् श्री कृष्ण ने भी अर्जुन से यही कहा –

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर ।।

गीता (३-अ)

अर्थात् यज्ञ के निमित्त किये जाने वाले कर्मों के अतिरिक्त, दूसरे कर्मों में लगा हुआ मानव कर्म बन्धन में बन्ध जाता है। अतः तू अर्जुन ! अनासक्त जब अर्जुन ने कहा – हे कृष्ण यह बताओ ज्ञानयोग श्रेष्ठ है या कर्मयोग? मुझे दोनों में से एक बताओ - भगवान् ने कहा – ज्ञानयोग के लिए भी कर्म करना आवश्यक है? अतः सर्वत्र कर्म प्रधान है।

कर्म एक सीढ़ी है, पहली को छोड़ कर ही दूसरे पर चढ़ता है। ऐसे ही मानव ऊपर-ऊपर चढ़ता हुआ सबसे ऊपर चढ़ जाता है। यही मानव का उद्देश्य है। ईश्वर ने उपदेश दिया **'उद्यानं ते पुरुषं नाऽवयानम्'** हे मानव ऊपर उठ, नीचे मत गिर। यजुर्वेद में भी वायवस्थ अर्थात् वायु की तरह – गतिशील बन। निरुक्त में गति की व्याख्या की है **'गति गन्धनयोः'** अर्थात् मानव जब गतिशील होता है, निष्क्रियता स्वयं समाप्त हो जाती है। कर्महीन मनुष्य को कुछ नहीं मिलता। कर्म क्या है इसका विचार आवश्यक है।

भगवद्गीता में कर्म और अकर्म के चिंतन में विद्वान् से विद्वान् भ्रमित हो गये असमंजस में पड़ गये। भगवान् श्री कृष्ण ने कर्म, विकर्म, तथा अकर्म तीन विधाएँ बताईं है। जो कर्म में रहते हुए निष्काम भावना से कार्य करता है, वही कर्ता होकर जीवन बिता सकता है।

कर्म दो प्रकार के हैं, एक-सांख्य योग जिसको ज्ञानयोग कहते हैं - दूसरा वह कर्म, जो ज्ञान के अनुसार किया जाता है।

वेद में श्रेष्ठतम कर्म की बात जो कही गई है वह ज्ञान के अनुकूल कर्म ही है। बिना ज्ञान के कर्म ग़लत भी हो सकता है। शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य ने, **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'** कहा ।

यज धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है। जिसमें देव पूजा, संगतिकरण और दान का अर्थ आता है। इस संसार में मानव के लिए विद्या-अविद्या संभूति (ऐश्वर्य) असंभूति (ऐश्वर्य रहित) दो दो मार्ग हैं जो दोनों ही आवश्यक हैं। इन्हीं को भौतिक-सांसारिक आध्यात्मिक ईश्वर विषयक बताया है। इन दोनों को समझने के लिए व्यवसायात्मिका बुद्धि जिसमें व्यापार व्यवहारादि कर्म होते हैं, दूसरी निश्चयात्मिका बुद्धि जिसको संकल्पित बुद्धि कहते हैं। इसीलिए जो भी कर्म करें योग की भावना से करें। योग का अर्थ जिस कर्म को करें उसी में लीन होना है। अतः मानव को यज्ञादि कर्मों में तल्लीन होकर करना चाहिए। तभी वह विकर्म अर्थात् विशेष कर्म अर्थात यज्ञमय बन सकेगा।

क्रमशः

गतांक से आगे

आर्य नाम

नारायणपत दसोई

मोनियर विल्लियम की दृष्टि में आर्य लोग सर्वप्रथम हिमालय पर्वत के बहुत ऊपर एक स्थान में निवास करते थे। यह स्थान तिब्बत की सीमा से सट कर पाया जाता है। इसी से तिब्बत की ही तरह उसे दुनिया की छत कहा जाता है। मोनियर विल्लियम के अनुसार पहले इसी स्थान पर आर्य लोग बड़े मज़े से रहते थे। पर जब समय के गुज़रने से आर्यों की संख्या उस स्थान में बढ़ गई थी तो उनका उस स्थान में रहना मुश्किल हो गया था। अतः रहने के लिए उन्होंने नया स्थान ढूँढ़ना शुरू किया था। यही कारण था कि हिमालय पर्वत के उस स्थान को उन्हें छोड़ना पड़ा था, जहाँ वे रहा करते थे। इस तरह जगह ढूँढ़ते-ढूँढ़ते भारत में पंजाब में वे आ गए थे।

यह जगह उन्हें रास आयी। पंजाब में जब उन्होंने पाँच नदियाँ देखीं तो पहले वे निहाल हो गये थे। फिर उन्होंने इस जगह को पाँच नदियोंवाली ज़मीन कहा। आज इस जगह का जो पंजाब नाम है, वह असलियत में पाँच नदियोंवाली जगह ही है। उर्दू में पाँच को पाँच ही कहा जाता है। पर पानी को 'आब' कहते हैं। इस तरह शाब्दिक अर्थ में यदि पंजाब का उर्दू में अनुवाद करेंगे तो वह 'पाँच पानियों' की जगह होगा।

यहाँ, अगर इस बात पर ग़ौर करेंगे तो पाया जाएगा कि आर्यों ने पाँच हज़ार साल पहले भारत की इस ज़मीन को जो नाम दिया था, वह आज भी बरक़रार है।

अब यदि इस बात पर भी ध्यान देंगे तो पाया जाएगा कि स्वामी दयानन्द ने भी मोनियर विल्लियम की ही भाँति सत्यार्थप्रकाश में यही बताया कि विश्व में जन्मे प्रथम मानव-समुदाय, जो आर्य थे, का निवास हिमालय पर्वत में ही था। पर यहाँ स्वामी दयानन्द और मोनियर विल्लियम की स्थापनाओं में जो भेद है, वह स्थान भेद है। पर दोनों ने यह अवश्य माना कि आर्यों का निवास-स्थान प्रथम हिमालय पर्वत ही था। पर हिमालय पर्वत पर जहाँ आर्य निवास करते थे, उसे मोनियर विल्लियम ने पामीर कहा था। लेकिन स्वामी दयानन्द ने बताया कि हिमालय पर्वत पर जहाँ प्रथम आर्य निवास करते थे, वह नेपाल था।

मोनियर विल्लियम ने वेद की उत्पत्ति के बारे में ऐतिहासिकता से काम लिया। इसी से वह यह नहीं मानते थे कि वेद अपुरुषेय हैं अर्थात् ईश्वर कृत हैं। उन्होंने यह माना कि वेदों की रचना के लिए ऋषियों ने दस सदियाँ लगाईं। पर जब पहले-पहल आर्य भारत में पंजाब की भूमि में आकर बस गए थे, तो उनके पास वेद नहीं थे। परन्तु क्योंकि उनका हृदय धर्म-भाव से परिपूर्ण था, इसीलिए वे प्रकृति को देवता मान बैठे थे और उसे उन्होंने एक अद्भुत मानव मान लिया था।

इसके अलावा भारत में हिन्दुओं के धर्म-विश्वास पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला और यह भी बताया कि कैसे वेद धीरे-धीरे लुप्त होते गए थे और उनके स्थान में ब्राह्मण-ग्रंथों को उस समय के पुजारियों ने प्रमुख स्थान दिया था। इस कारण, धर्म का नाश हुआ और भारत का पतन भी होता गया। इससे भारत को विदेशियों के आक्रमणों का शिकार होना पड़ा था।

इन आक्रमणों का क्रम तब रुका, जब अंतिम आक्रमणकारी के रूप भारत में अंग्रेज़ आए थे।

'तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योः' (ब्रह्मज्ञानी मृत्यु से नहीं डरता)

डॉ० (श्रीमती) चेतना शर्मा बद्री (अ० १०.८.४४)

१९वीं शताब्दी में भारत में अनेक सुधारवादी आंदोलन प्रारम्भ हुए। सुधारवादी कार्यक्रमों को विशाल और व्यापक रूप महर्षि दयानन्द ने १८७५ में आर्य समाज की स्थापना करके किया। स्वामी दयानन्द के कार्यों से तत्कालीन मानव जीवन प्रभावित हो रहा था।

महर्षि दयानन्द के अंधविश्वास एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन एवं संघर्ष का जन-मानस पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा था, जिसके कारण मानव जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। परिणामस्वरुप अनेक मनुष्य जीवन के उच्च शिखर पर पहुँचे। उन्हीं व्यक्तियों में एक महान आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती थे, जिनके बचपन का नाम मुंशीराम था, जिनका जन्म अप्रैल १८५६ में तथा बलिदान २३ दिसम्बर १९२६ को हुआ था। जिन्हें स्वराज्य, स्वदेशी वस्तुओं, छुआछूत, भेदभाव और स्वभाषा के प्रयोग की प्रेरणा स्वामी दयानन्द के ग्रंथों से मिली, जिन्हें पढ़कर मुंशीराम ने इनको क्रियात्मक रूप देने का निश्चय किया ।

शिक्षा के द्वारा स्वराज्य प्राप्ति व स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रेरणा दी जा सकती है। इसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी की इच्छा थी की कुछ ऐसी शिक्षण संस्थाएँ खोली जाएँ जिससे केवल शब्द और विषय का ज्ञान ही नहीं अपितु छात्र-छात्राओं के शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों का भी विकास हो वहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी में राष्ट्रीयता की भावना समायी हो। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वामी जी ने १९०१ में हरिद्वार में गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना की। महात्मा गांधी ने भी उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था – लोग मुझे महात्मा कहते हैं पर में महात्मा नहीं हूँ यदि सच्चे महात्मा के दर्शन करने हैं तो हरिद्वार में उस महापुरुष के दर्शन करो जिसका नाम महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) है, जिसने गुरुकुल जैसी पवित्र संस्था के माध्यम से हिन्दी भाषा की नाद गुंजा दी है।

महात्मा मुंशीराम गुरुकुल के छात्रों को स्वराज्य और स्वाधीनता की प्रेरणा सदैव ही देते रहते थे, जिससे प्रेरित हो छात्रों ने एक महीने तक एक समय का भोजन बचाकर पैसा इकट्ठा कर अफ़्रीका में महात्मा गांधी को भेजा, जिसके लिए गांधी जी ने उनके और देशभक्त छात्रों के प्रति आभार प्रकट किया और भारत आने पर स्वामी जी के चरणों में सिर झुकाया। महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने उन्हें 'महात्मा' कहते हुए अपने हाथों से उठाया तब से महात्मा गांधी 'महात्मा' के नाम से विश्वविख्यात हुए।

राष्ट्रीय शिक्षा के पुरस्कर्ता व हिन्दी के परम उन्नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी उन महापुरुषों में थे जो न केवल क्षेत्र विशेष में चमके अपितु शिक्षा, राजनीति सदाचार, देश सेवा एवं दलितोद्धार आदि क्षेत्रों में भी उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। संन्यासी होने के पश्चात् स्वामी जी का जीवन अस्पृश्यता-निवारण के कार्य का इतिहास कहा जा सकता है। संन्यास आश्रम के उद्देश्य जाति सेवा से प्रेरित होकर हिन्दू समाज को संगठित करने के लिए शुद्धि आंदोलन प्रारम्भ किया, जिसके लिए अपने प्राणों की भी आहुति लगा दी। व श्रद्धापूर्वक देश-सेवा करके अपनी आत्मा को प्रकाशित कर दिया।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश और मानव जाति पर अकथनीय उपकार किये। उन्होंने हमें श्रद्धा और आनन्द दोनों ही प्रदान किये, जिसे हम खो न दें, यदि स्वामी जी के बताये मार्ग को अपनायेंगे व उनकी शिक्षाओं का अनुकरण करेंगे तो सब कुछ बदल सकता है, देश और मानव समाज की बिगड़ी दशा सुधर सकती है।

Vedic Wedding Conditions

Pandit Yaswantlall Chooromonay

The Vedic Wedding Ceremony initiated by Maharishi Swami Dayanand Saraswatee in *"Sanskar Vidhi"* is mostly based on *Griha Sutras* that contain a very high level of sanctity, spirituality and morality that meet the requirements of a householder.

The preparation and performance of the ceremony must be done with utmost seriousness in collaboration with all the parties concerned, that is, bride, groom, their parents, pandit and guests. The priest has the greatest part of responsibility in any wedding ceremony. He has to guide the parents on the preparation of the ceremony and the bride and groom on the meaningful rituals. This must start right from the time reservation is made by the parents.

Before accepting to perform a Vedic wedding ceremony, the pandit must impose relevant of conditions in written upon the parents. I have been doing that for the past fifteen years and I can assure all pandits that it works very well. When parents see the discipline and professionalism of the Pandit, they do not dare to go against his principles. I am proposing an upgraded copy of the conditions which I give to parents at the time of reservation. I had to prepare the text in English as most parents cannot read and understand Hindi.

CONDITIONS FOR ACCEPTANCE TO PERFORM A WEDDING CEREMONY

1. Both Pre-wedding and Wedding ceremonies will be strictly Vedic, as practised in Mauritius.
2. The Wedding ceremony maybe officiated by the Pandit alone.If the ceremony has to be conducted by two Pand its, the other one should also be a Vedic Pandit of the ARVA SABHA.
3. Civil Marriage Certificate must be made available well before the wedding day for verification and record. The Pandit may refuse to perform the wedding ceremony if Civil Marriage Certificate has not been submitted on time.
4. Time scheduled for the ceremony must be strictly respected. In case of extreme lateness, the Pandit may shorten the ceremony.
5. A copy of the invitation card, as soon as it is available, must be shown to the Pandit in order to confirm the reservation date, time and other details.
6. The Pandit must be immediately informed about any change brought in the wedding schedule.
7. All wedding samans must be made available on the *Bedi* well before the ceremony starts. P.. list of all samans may be obtained from the Pandit himself.
8. The Pandit will be solely responsible to conduct the ceremony. Responsible family must ensure that nobody interferes in the rituals. Remarks and comments can be made afterwards.
9. Non-vedic rituals, such as Haldi, Sindoor and Mangatsutra, may be done but under conditions mutually accepted by the Pandit and parents of both Bride and Groom.
10. Sindoor may be offered after the prescribed Vedic rituals but without any veil.
11. Photographers and video-recorders must be informed not to create any inconvenience to the Pandit and the guests while the ceremony is going on.No ritual will be repeated for the sake of taking photographs only.
12. The Bride and the Groom must contact the Pandit, about a week before the wedding day, for a session of PRE¬MARITAL COUNSELLING and VEDIC WEDDING STEPS COACHING. This activity may take about 90 minutes.
13. Transport arrangements, where applicable, must be clearly settled well in advance.
14. A good microphone must be made available to the pandit so as to enable guests to follow the ceremony properly.
15. If refreshments and cakes have to be served to guests during the ceremony, servers must be informed to carry out that activity in discipline and without any noise.Do not serve non- veg cakes or snacks.
16. The Pandit will depart as soon as the ceremony is over.
17. Adequate *Dakshina* to the Pandit must be offered just after the end of the ceremony.

D.A.V. DEGREE COLLEGE

affiliated with

KURUKSHETRA UNIVERSITY, Haryana, India

run under the aegis of

ARYA SABHA MAURITIUS

in collaboration with

MAHARISHI DAYANAND INSTITUTE

requests the pleasure of your company

on the occasion of the **Graduation Ceremony** for the

Faculty of Arts

Date & time : Saturday 15 December 2012 at 2.30 p.m.
Venue : D.A.V. Degree College, Michael Leal Avenue, M2 Lane, Pailles.

Various eminent personalities will grace the function by their presence.

Harrydev Ramdhony	Satyadeo Peerthum	Bholanath Jeewuth
President	*Secretary*	*Treasurer*